Page-2
History P-III

फिरोजशाह तुगलक

मोहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद कुछ समय तक असमंजस की स्थिति बनी रही। इस कठिन परिस्थिति से उबरने के लिए दरबारियों ने फिरोज से सिंहासन पर आने की प्रार्थना की। फिरोज ने इसे स्वीकार कर लिया और 23 मार्च 1351 को सुल्तान बना। इस समय उसकी आयु 46 वर्ष थी। उसने सेना में अस्थिरता की स्थिति समाप्त करने में सफलता पाई और दिल्ली की ओर प्रस्थान किया, लेकिन दिल्ली में ख्वाजाजहाँ ने एक नाबालिग लड़के को मोहम्मद बिन तुगलक का उत्तराधिकारी बना दिया जिससे फिरोज के लिए कठिनाई हो गई। लेकिन लड़के को अयोग्य घोषित कर दिया गया।

बंगाल के स्वतंत्र शासक हाजी इलियास शाह ने दिल्ली सल्तनत के कुछ क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया। जिस कारण फिरोज ने उस पर आक्रमण कर दिया। फिरोज ने उसे परास्त किया और बंगाल को बिना अपने राज्य में मिलाए दिल्ली वापस लौट गया।

लेकिन बंगाल को दिल्ली में मिलाने के लिए 1359 ई० में पुनः आक्रमण किया। बंगाल की सेना ने भी जमकर मुकाबला किया, फिरोज का बंगाल अभियान पूरी तरह असफल रहा।

बंगाल से लौटते समय फिरोज ने जाजनगर पर आक्रमण कर वहाँ के शासक को अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर कर दिया।

P.T.O

नगरकोट पर भी आक्रमण कर वहाँ के शासक को सल्तनत की अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। 1361-62 में फिरोज ने सिन्ध पर आक्रमण करने की योजना बनाई और आक्रमण भी कर दिया। लेकिन अकाल और बीमारियों के कारण फिरोज को गुजरात लौटना पड़ा और उसके तीन-चौथाई सैनिक हताहत हुए। उसने दिल्ली से और सैनिक मंगवाये और जाम बाबनिया को शांति सन्धि करने के लिए मजबूर किया।

इसी प्रकार दक्षिण विजय का उसका धार्मिक प्रयास सफल न हुआ। फिरोज के अन्तिम दिन ~~[illegible]~~ काफी अशान्ति में बीते।

फिरोज के शासनकाल में ही गृहयुद्ध छिड़ गया और मोहम्मद खाँ सिरमुर की पहाड़ियों में भाग गया। फिरोज ने 20 सितम्बर 1388 को मरने से पहले फतह खाँ के पुत्र तुगलक खाँ को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।